Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 3 ~ Issue 7 (2015) pp: 81-85
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

मोहनदास नैमिशराय का साहित्य सवर्ण समाज का आईना

सिया राम मीणा
(व्याख्याता–हिन्दी) बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय , अलवर , (राज.) 301001

शोध सारांश

मोहनदास नैमिशराय आत्मकथा सत्तर और अस्सी के दशक के दलित उत्पीड़न और अत्याचार की अनगिनत घटनाओं से रुबरु कराती है। दलित चेतना के उभार और प्रतिरोध को भी सामने रखती है। समाज और परिवार से बेदखल होने की पीड़ा को महसूस करवाती है। यह दलित जीवन के विभिन्न रंगों और संघषों का पता देने वाली आत्मकथा है। यह आत्मकथा जहाँ दलित जीवन की खौलती हुई सच्चाइयों को सामने रखती है, वहीं सवर्ण समाज के दलितों के प्रति रवैया और सोच को भी उभारने का काम करती है। इस आत्मकथा में दलित जीवन के जो रंग दिखाई देते हैं, वो रोमानियत और भोगविलास के नहीं बल्कि संघर्ष और सरोकार के हैं। मोहनदास नैमिशराय ने अपनी संवेदात्मक तथा अनुभूति के उसी स्तर को अपने दलित साहित्य में प्रस्तुत किया है। इन्होंने अपने साहित्य में समतावादी विचारों का आंदोलन चलाने का प्रयास किया है। इनका साहित्य शुद्ध सैद्धांतिक मत–मतांतरों के आवर्त से कलकर परवेश की संबंधता में दलित आदमी के अनुभव जगत् में ले जाता है। बचपन में ही मोहनदास ने जातियता की अनुभूति को भुगता है, जिस तरह से समाज में आज भी दलितों के हालात ज्यादा बदले नहीं हैं उसी प्रकार मोहनदास का परिवार भी व्यवस्था का शिकार बना था। अतः मोहनदास नैमिशराय के व्यक्तिगत जीवन , कृतित्व एवम आत्म कथा का अध्ययन किया जाना गया है ।

परिचय :–

मोहनदास नैमिशराय का जन्म 5 सितंबर 1947 को उत्तर प्रदेश के मेरठ शहर में हुआ था। चमार जाति में जन्में मोहनदास का परिवार गरीब था। उत्तर भारत में हर दलित के आंगन में एक नीम का पेड़ होता है। घर के आंगन में एक नीम का पेड़ होने के कारण उनका नाम नैमिषाराय पड़ा। यानि नैमिश्राय, इस नाम का संबंध नीम से है। जिस परिवार में मोहनदास नैमिशराय का जन्म हुआ था, वह सदियों से अपने चमार पेशे को चला रहा था, लेकिन उनके पिता सूर्यकांत जी सेना में थे। बचपन में ही उनकी मां का देहांत हो गया था।आपके परिवार के सदस्य पढ़े–लिखे हैं और सरकारी विभाग में कार्यरत हैं। मोहनदास नैमिशराय ने बचपन से ही गरीबी को सहा है। बचपन में अभावों के साथ–साथ विषमता भी इन्हें सताती रही है। जातियता के नाम पर इन्हें अपमानित किया जाता था। जब यह स्कूल जाते थे तो उन्हें सवर्ण समाज के लड़के 'चम्मटे' कहकर उनकी उपेक्षा करते थे। मोहनदास ने अपनी आत्मकथा में लिखा है– "मेरा बचपन कुछ विषम परिस्थितियों में बीता ।"" माँ का अभाव भी महसूस होता था । गरीबी के कारण नंगे पैर स्कूल जाना पड़ता था, जबकि सवर्ण समाज के लड़के पॉलिश के जूते पहनते थे। वे खाली समय में अपने ही घर के दुकान में काम करते थे। कई बार तो इन्हें काम करते समय चोटें सहनी पड़ती थी। हाथ से खून भी निकलता था। बचपन में माँ न होने के कारण पिता और घर–परिवार के अन्य सदस्यों ने इन्हें खूब प्यार किया है। बचपन के दोस्तों में विशेष रूप से रसवंती, सौभाग्यवती, सुभद्रा, मंगो, बिरजो आदि रहे हैं जिनके साथ सोलह बरस तक खेलने का आनंद मिला। इस सन्दर्भ में अजय वर्मा लिखते हैं, ''मोहनदास नैमिशराई वर्तमान दलित साहित्यिक आन्दोलन के सशक्त लेखक हैं। उनकी आत्मकथा यह साबित करती है कि हिन्दी क्षेत्र में आत्मकथा लिखने का जोखिम भरा काम केवल दलित साहित्यकार ही कर सकते हैं, क्योंकि नकलची कुलीन होते हैं। साहित्यकारों में आत्म–निंदा करने का साहस नहीं है। वे अपने सामाजिक, आर्थिक जीवन में जिन संघर्षों का सामना कर रहे हैं, उनसे वे मुग्ध हैं, वे साहित्य में उन्हीं संघर्षों से लड़ रहे हैं । आपको ऐसा लगता है कि हर एक मनुष्य समतावादी विचारों को समझे। जाति, धर्म, वर्ण आदि भेदों से मनुष्य को निकलकर इन्सानियत को निभाना चाहिए यह आपकी विचारधारा है। बहुजन समाज को अपने मूल विचारों में परिवर्तन करना चाहिए, क्योंकि 'मूल विचारों का परिवर्तन ही सब परिवर्तनों का आधार है' यह विचार आप मानते हैं । सवर्ण लोगों ने जाति के प्रति अपने दृष्टिकोन में बदलाव लाना चाहिए। बहुजन समाज के लोग इस देश के मूल निवासी हैं। बहुजन समाज ने अपने हक, अधिकार के लिए तत्पर रहना चाहिए ऐसा आपको लगता है। परिवर्तनवादी विचारों ने आपको प्रभावित किया है। आपकी क्रियाशीलता इसकी पहली नींव है। काशीराम जी पर श्रद्धा रखकर बहुजनों के जीवन में खुशहाली लाने के कार्य में एक कार्यकर्ता के रूप में आप कार्यरत हैं। परिवर्तन की लड़ाई विचारों की लड़ाई बनी है, जिसके आप योद्धा हैं। अपनी लेखनी द्वारा यह कार्य आज तक जारी है। परिवर्तन की यह जंग जारी है।

मोहनदास नैमिशराय की आत्मकथा सवर्ण समाज का आईना :–

दलित विमर्श के विलक्षण सिद्धांतकार और लेखक मोहनदास नैमिशराय पिछले तीन–चार दशकों से दलित समस्याओं पर लगातार लिखते और विचार करते आ रहे हैं। दलित समाज के यथार्थ को सामने लाने के लिये उन्होंने पत्रकारिता को अपना साधन बनाया था। 'धर्मयुग' और 'संचेतना' पत्रिका से जुड़कर लगातार दलित समाज और उसकी राजनीति पर लिखा था। मोहनदास नैमिशराय ने दलित हलकों की समस्याओं को उठाने के लिये अस्सी के दशक में 'बहुजन अधिकार' नामक पत्र निकाला था। इस पत्र में सवर्ण वर्चस्व और जाति–व्यवस्था पर बड़ा मारक और तीखा प्रहार किया जाता था। इसके दलित साहित्य और विमर्श को धार देने के लिये उन्होंने 'बयान' पत्रिका निकाली थी। दलित साहित्य के योगदान में इस पत्रिका का अपना ही स्थान है। इन सबके बावजूद मोहनदास नैमिशराय का पत्रकारिता की अपेक्षा साहित्य सृजन वाला पक्ष ज़्यादा निखर कर सामने आया है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि साहित्यिक और बौद्धिक दुनिया में उनकी पहचान पत्रकार से ज़्यादा एक दलित विचारक और साहित्यकार की है। मोहनदास नैमिशराय क़रीब पच्चीस साल पहले 'अपने–अपने पिंजरे' (1995) नामक आत्मकथा लिखी थी। इस आत्मकथा की चर्चा साहित्य हलकों में खूब हुई थी। जब हिंदी के नामी दलित साहित्यकारों ने अपनी आत्मकथा ही नहीं लिखी थी, उस समय तक मोहनदास नैमिशराय की आत्मकथा का दूसरा खंड 'अपने–अपने पिंजरे' (2001) प्रकाशित हो चुका था। इसके बाद उन्होंने लगातार दलित साहित्य और इतिहास पर शोध जारी रखा। इसके बाद मोहनदास नैमिशराय द्वारा लिखित 'भारतीय दलित साहित्य आंदोलन का इतिहास' चार खंडों में प्रकाशित होकर आया था।

अस्सी और नब्बे का दशक साहित्य और राजनीति में बड़े बदलाव का सूचक माना जाता है। जहाँ अस्सी का दशक दलित राजनीति के फैलाव का सूचक है, वहीं दलित साहित्य की सुगबुगाहट के स्वर भी सुनाई देने लगते हैं। इन्हीं दिनों मोहनदास नैमिशराय मेरठ से आकर दिल्ली में रहने लगते हैं। सरोकारों वाली पत्रकारिता के बल पर दिल्ली और बंबई के बुद्धिजीवियों और प्रतिष्ठित व्यक्तियों के बीच एक अपनी मुकम्मल पहचान भी बना लेते हैं। मोहनदास नैमिशराय की आत्मकथा का तीसरा खंड 'रंग कितने संग मेरे' नाम से अभी हाल में ही प्रकाशित हुआ है। इस आत्मकथा को पढ़ने के बाद मुझे महसूस हुआ कि अस्सी के दशक में अपनी अस्मिता और दलित सरोकारों के लिये जद्दोजहद और संघर्ष करते हुये दलित लेखक के अनुभव और संघर्ष के विविध रंगों को बड़ी शिद्दत से सामने लाने वाली आत्मकथा है।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि दलित जीवन संघर्ष और अभाव भरा होता है। सामाजिक अपमान और ग़रीबी उसकी स्थाई जमापूंजी होती है। वह सवर्णों के अपमान और गरीबी से निजात पाने के लिये संघर्ष भी करता है। एक चेतना परक दलित व्यक्ति उच्च श्रेणी की मानसिकता और ग़रीबी से एक साथ दो मोर्चों पर लड़ता रहता है। मोहनदास नैमिशराय इस आत्मकथा की शुरुआत में ही एक बड़े मार्के की बात कहते हैं कि संघर्ष की भट्ठी में तपकर उनका जीवन निखरा और सँवरा है। कई तरह के सामाजिक और पारिवारिक अपमान झेलने के बाद भी यह आत्म कथाकार अपने दलित सरोकार और दलित आंदोलन से पीछे नहीं हटता है। इस आत्म कथाकार का कहना है कि संघर्ष करने की प्रेरणा उन्हें दलित महापुरुषों और क्रांतिकारियों से मिली है।

दलित महानायकों के संघर्ष और त्याग से प्रेरणा लेकर मोहनदास नैमिशराय सामाजिक न्याय के रास्ते में बाधा बनी जातिवादी इमारतों को ढहाने का प्रयास अपने लेखन और पत्रकारिता में करते हैं। वह आत्मकथा में कहते हैं कि जैसे रोज़ सूरज उगता था, वैसे ही मेरे भीतर चेतना उगती और उसका विस्तार होता रहता था।

अस्सी के दशक में मोहनदास नैमिशराय का दलित उत्पीड़न करने वालों के प्रति आक्रोश तीखा और मारक हो जाता है। वे गोष्ठियों और कॉफी हाउस में ज्वलंत समस्याओं और सवालों को उठाने लगते हैं। मोहनदास नैमिशराय का अनुभव बताता है कि कॉफी हाउस में सभी तरह के लोग मिलते थे। नैमिशराय बताते हैं कि सन् 1981 में बामसेफ का 'समता–समानता' का आंदोलन अपने उत्कर्ष पर था। और, मान्यवर कांशीराम ने सन् 1981 में 'दलित शोषित संघर्ष समिति' बनाकर वैचारिक और राजनैतिक रूप से दलितों और पिछड़ों को गोलबंद करना शुरू कर दिया था। सन् 1984 में मान्यवर कांशीराम ने 'बहुजन समाज पार्टी' का गठन कर दलितों को सत्ता के सिंहासन तक पहुँचने का रास्ता तैयार कर दिया था। इन सब घटनाओं का असर मोहनदास नैमिशराय के लेखन और विचार पर भी पड़ रहा था। मोहनदास नैमिशराय ने दलित राजनीति पर एक कवर स्टोरी लिखी थी। इस कवर स्टोरी में उन्होंने बी.पी. मौर्य, कांशीराम, आर.एस. गवई, प्रकाश आंबेडकर, हाजी मस्तान, अरुण काम्बले और मैकूराम जैसे नेताओं के साक्षात्कार लिये थे। मोहनदास नैमिशराय की यह कवर स्टोरी 'धर्मयुग' सितम्बर 1989 के अंक में 'चुनावी हवा, क्या करवटी लेगी दलित राजनीति' शीर्षक से प्रकाशित हुई थी।

दलित चेतना :–

जब दलित चेतना और राजनीति का विकास हो रहा था तभी सवर्णों ने दलितों को डराने और मनुकाल की याद दिलाने के लिये 24 जून 1989 को राजस्थान उच्च न्यायालय के परिसर में मनु की आदमकद मूर्ति स्थापित करवा दी थी। वहाँ के दलितों ने इस पर प्रतिरोध और आक्रोश भी व्यक्त किया था। इसका असर यह हुआ कि न्यायाधीशों ने यह प्रस्ताव

*Corresponding Author: सिया राम मीणा

पारित किया कि मनु की मूर्ति वहाँ से हटाई जाए। लेकिन 'राजस्थान विश्व हिंदू परिषद' की ओर से याचिका दायर कर दी गई और फ़ैसले में न्यायाधीशों के प्रस्ताव को पलट दिया गया था। मोहनदास नैमिशराय ने अपनी इस आत्मकथा में दर्ज किया है कि लोकतंत्र और राजतंत्र को एक खूँटे में बाँध दिया गया था। और, संविधान को ताक पर धकेलने का प्रयास शुरू हो गया था।

इसमें कोई शक नहीं है कि यह उच्च श्रेणी की मानसिकता वाला समाज दलितों के साथ भेदभाव से पेश आता रहा है। सवर्ण समाज के उच्च शिक्षित और पढ़े लिखे व्यक्ति भी जाति के जामे से अपने आप को मुक्त नहीं कर पाये हैं। एक लेखक और नागरिक के तौर नैमिशराय के जीवन में ऐसा भी क्षण आया, जब उन्हें दलित होने का अहसास सवर्ण संपादकों और बुद्धिजीवियों की ओर से करवाया गया था।

विद्यानिवास मिश्र का ज़िक्र :–

विद्यानिवास मिश्र हिंदी के बड़े लेखक और संपादक के तौर पर जाने जाते हैं। हिंदी साहित्य में उनकी बड़ी प्रतिष्ठा रही है। बड़ी दिलचस्प बात यह है कि विद्यानिवास मिश्र अपनी उच्च श्रेणी वाली मानसिकता से मुक्त नहीं हो पाये थे। मोहनदास नैमिशराय बताते हैं कि जब वह 'नवभारत टाइम्स' के लिये पत्रकारिता करते थे तो एक अनुबंध के तहत उनके संपादक ने उन्हें बोधगया शहर के ब्राह्मणों और पंडों पर एक फीचर लेख तैयार करने के लिये भेजा था। जब बोधगया से लौटे तो पता चला कि 'नवभारत टाइम्स' के संपादक विद्यानिवास मिश्र को नियुक्त कर दिया गया है। जब उन्होंने बोधगया के पुरोहितों और पंडों पर लिखा फीचर लेख संपादक विद्यानिवास मिश्र को दिखाया तो उन्होंने लेख को गटर में फेंकने की सलाह दे डाली थी।

मोहनदास नैमिशराय ने इस फीचर लेख में पुरोहितों और पंडों के पाखंड को उजागर किया था। विद्यानिवास मिश्र इस फीचर लेख में पुरोहितों और पंडों की आलोचना बर्दाश्त नहीं कर सके थे।

दरअसल, इस सोच के संपादक किसी भी अख़बार को लोकत्रांतिक बनने नहीं देते हैं। ऐसे ही संपादकों की जाति मानसिकता के चलते दलित उत्पीड़न की ख़बरें समाचार पत्रों से दरकिनार कर दी जाती हैं। मोहनदास नैमिशराय ने अपने अनुभव में बताया कि अमीर और ग़रीब दोनों प्रकार के ब्राह्मण दलित चेतना के सूरज को रोकने में बड़ी अहम भूमिका निभाते हैं।

इसमें कोई दो राय नहीं है कि आत्मकथा के लिखने के अपने ख़तरे भी होते हैं। दलित लेखकों को आत्मकथा लिखने पर कई बार सगे संबंधियों और समाज के बीच अपमानित भी होना पड़ता है। मोहनदास नैमिशराय ने अपनी आत्मकथा में एक ऐसे वाकये का ज़िक्र किया है कि जिससे पता चलता है कि आत्मकथा लिखने का खामियाजा किस स्तर तक उठाना पड़ता है। मोहनदास नैमिशराय बताते हैं कि उनके बेटे का किसी लड़की से प्रेम प्रसंग चल रहा था। इस प्रेम प्रसंग की जानकारी मोहनदास नैमिशराय को नहीं थी। इस प्रेम प्रंसग को दोनों परिवार के परिजन विवाह में तब्दील करना चाहते थे। एक दिन मोहनदास नैमिशराय के घर बेटे की प्रेयसी की माँ रिश्ता लेकर आई थी। मोहनदास नैमिशराय ने जाते वक़्त अपने बेटे की प्रेयसी की माँ को अपनी आत्मकथा 'अपने–अपने पिंजरे' भेंट कर दी थी। इस आत्मकथा की भेंट से उनके बेटे का रिश्ता टूट गया था। क्योंकि मोहनदास नैमिशराय ने आत्मकथा के भीतर अपनी जाति और परिवार की स्थिति के संबंध में लिखा था। शायद लड़की की माँ ने जाति जानने के बाद उनके बेटे से अपनी बेटी का रिश्ता तोड़ दिया था।

बेटे का रिश्ता तोड़ने का ज़िम्मेदार परिवार वालों ने मोहनदास नैमिशराय और उनकी आत्मकथा को माना था। यह रिश्ते टूटने के बाद मोहनदास नैमिशराय और उनके बेटे के रिश्तों में दरार पड़ गई थी। लेकिन इससे सवर्ण समाज की जातिवादी मानसिकता का भी पर्दाफाश हो गया।

कथाकार कमलेश्वर का एक दौर में फ़िल्मी दुनिया में बड़ा जलवा हुआ करता था। कमलेश्वर का दलित लेखकों और लेखन के प्रति स्वभाव नरम और उदार था। यही सोचकर मोहनदास नैमिशराय ने फ़िल्मी लेखन करने के लिये कमलेश्वर को एक पत्र लिखा था। कमलेश्वर ने मोहनदास नैमिशराय के पत्र का जवाब देते हुए कहा था कि मेरा कार्यक्षेत्र हमेशा बदलता रहता है लेकिन कार्य एक ही रहता है। फ़िल्मों में इतना अधिक काम करने के बावजूद मुझे, इतना रचनात्मक सन्तोष कभी नहीं मिला है। पूरी तरह धँसकर भी मेरी दोस्ती किसी से इतनी प्रगाढ़ नहीं है कि मेरे कहने मात्र से आपके लिये लेखन का रास्ता खोल दे।

नैमिशराय का साहित्य महापुरुषों के विचारों को आगे बढ़ा रहा है। महापुरुषों ने भी अन्याय, अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह किया। गुलामी की कहानी के खिलाफ विद्रोह भी हुआ था। नैमिश्राय का साहित्य भी दलित समाज को गुलामी की जंजीरों से मुक्त कराना चाहता है। नैमिशराय का दलित साहित्य के अध्ययन से घनिष्ठ संबंध होने के कारण नैमिष राय ने साहित्य को आगे बढ़ाने के लिए दिन–रात मेहनत की। वे लिखते हैं, 'दस साल की उम्र में मुझे उपन्यास, कहानियां, नाटक, कविताएं पढ़ने की लत लग गई थी।' स्पष्ट है कि साहित्य में रुचि होने के कारण उन्होंने कम उम्र में ही साहित्य

*Corresponding Author: सिया राम मीणा

लेखन के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया था। जब लेखक मेरठ से बॉम्बे भाग गया, तो उसने बॉम्बे के सामान्य जीवन पर पहली कविता भी लिखी।

सामाजिक आंदोलन को सफल बनाने के लिए नैमिशराय ने इस संगठन 'बामसेफ' में भी काम किया था। नैमिश्राय की कृतियों को पढ़कर दर्शक आनंदित होते हैं। नैमिशराय के समय में वे नियमित रूप से साप्ताहिक 'ब्लिट्ज' पढ़ते थे जो थोक में बेचा जाता था। उन्होंने परिवर्तनकारी साहित्य की कड़ी को आगे बढ़ाने के लिए साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक, दैनिक आदि पत्रिकाओं में लेखन कार्य भी किया है। 'भीम पत्रिका' उत्तर प्रदेश की प्रमुख पत्रिकाओं में गिनी जाती थी। नैमिश्री कई दिनों से उस पत्रिका में लिख रहे थे। समतावादी आंदोलन को आगे बढ़ाते हुए, उनका परिचय दलित आंदोलन के प्रमुख आंदोलनकारियों काशी राम, मायावती, तेज सिंह, रामविलास पासवान, भीम सिंह आदि से हुआ। संगठन को मजबूत करने के लिए बामसेफ में अपनी नौकरी से इस्तीफा देते हुए, नैमिशरई ने कार्यकारी के रूप में भी काम किया। 'बहुजन संगठन' पत्रिका के संपादक। नैमिश्री जी की सभी रचनाओं में सामाजिक यथार्थ को सामने लाने का प्रयास किया गया है। उपन्यास 'आज बाजार बंद है' में वेश्याओं की समस्या का विशेष रूप से चित्रण किया गया है। देवदासी समाज का जीवन, उनका शोषण भी उपन्यास में दिखाई देता है। नैमिश्री के अनुसार– "मेरे सभी कार्य समाज के भीतर की वास्तविकता को उकेरते हैं।" दलित साहित्य (हिंदी) में मोहनदास नैमिश्री की आत्मकथा को प्रथम माना जाता है। नैमिशराई को उन सभी साहित्यकारों में भी माना जाता है जो दलित साहित्य में प्रमुख हैं।

मोहनदास नैमिशराय दलित साहित्य के प्रतिनिधि लेखक और विलक्षण विमर्शकार हैं। सन् 1998 में उनका पहला कहानी संग्रह 'आवाजें' प्रकाशित हुआ था। इसके बाद 'हमारा जवाब' (2005) और 'मोहनदास नैमिशराय की चुनी हुई कहानियाँ' (2017) प्रकाशित हुए हैं। दलित साहित्य के निर्माताओं में शुमार मोहनदास नैमिशराय की कहानियां जातिगत शोषण और सामंतवाद की क्रूरताओं को सामने लाती हैं।

मोहनदास नैमिशराय की खसियात है कि वे अपनी कहानियों के माध्यम से ग्रामीण अंचलों में जातिगत और ऊंची जाति के लोगों के सामंती दबदबे को उघाड़ने का काम करते हैं। इनकी कहानियों में जातिवाद और सामंतवाद एक ही सिक्के के दो पहलुओं के तौर पर प्रस्तुत हुए हैं। मसलन, 'अपना गाँव' कहानी सवर्णों की जातिगत और सामंती ज्यादतियां और बदसलूकी की गहराई से पड़ताल करती है। सवर्णों की ज्यादतियां और अत्याचार केवल दलित पुरुषों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि दलित स्त्रियों को भी अपनी जद में लेकर उनके साथ क्रूरता और निर्ममता होती है। जातीय दंभ और सामंतवाद की मानसिकता से भरे लोग दलित स्त्रियों को सार्वजनिक स्थानों पर अपमानित कर अपनी कुंठा और घृणा की नुमाइश करते रहते हैं।

'अपना गांव' कहानी में गांव के ठाकुरों द्वारा दलित स्त्री कबूतरी पर जिस तरह से जुल्म और अत्याचार किया जाता है, वह केवल दलित समाज को नहीं बल्कि पूरी मानवता को शर्मसार करने वाला है। गांव के सामंत कबूतरी को महज इसलिए पूरे गांव के सामने निर्वस्त्र करके घूमाते हैं, क्योंकि उसका पति सम्पत ने ठाकुरों का कर्ज समय पर चुकता नहीं कर पाया था। सामंती मानसिकता से भरे लोग अपने पुरुषत्व की सारी आजमाइश कबूतरी जैसी दलित स्त्रियों पर करता है। इस कहानी में सामंती और जातिवादी वर्चस्व की त्रासदी कबूतरी और उसके ससुर हरिया की पीड़ा के तौर पर उभरती है।

वहीं 'आवाज' कहानी के माध्यम से मोहनदास नैमिशराय ने सामंती और अमानवीय परंपराओं के खिलाफ दलितों के गुस्से और प्रतिरोध को सामने लाया है। वर्ण व्यवस्था में दलितों के साथ अमानवीय पेशों को भी जोड़ा जाता है। इस व्यवस्था के तहत मरे हुए जानवरों की खाल उतारने और मैला ढोने का काम दलितों को दिया जाता था। जैसे–जैसे दलित जातियों में शिक्षा का प्रसार हो रहा है, उन्होंने घिनौने पेशों को छोड़ना उचित समझा है। आवाज़ की कहानी में इतवारी और उसके सफाईकर्मी सामंतों की गंदगी और कूड़ा उठाने से इनकार करते हैं। मैला ढोने वालों के इस फैसले को सामंत औतर सिंह अपने गौरव पर आघात के रूप में देखते हैं. उनकी सामंती मानसिकता यह स्वीकार नहीं करती है कि भंगी समाज के लोगों को गंदगी और गंदगी का पेशा छोड़कर एक सम्मानजनक पेशा चुनना चाहिए। दलितों को सबक सिखाने के लिए सामंत औतार सिंह ने रात में अपनी बस्ती में आग लगा दी। दलितों के लिए जातिवाद और सामंती व्यवस्था कितनी भयानक है, इसे इस कहानी में बड़े जोश के साथ दर्शाया गया है। ब्राह्मण समाज के भीतर एक अलग प्रकार की पदानुक्रम आधारित संरचना मौजूद है। मोहनदास नैमिश्राय की एक और कहानी 'महाशूद्र महाब्राह्मण' एक ऐसी कहानी है जो ब्राह्मण समाज में मौजूद जातिवाद को सामने लाती है। कथा में आचार्य जी ब्राह्मण समाज से हैं। वे श्मशान घाट में अंतिम संस्कार करते हैं। इस पेशे के कारण, उच्च पद के ब्राह्मण उसे घृणा की दृष्टि से देखते हैं। आचार्य जी बताते हैं कि जब वे ब्राह्मण के घर जाते हैं तो उन्हें घर के बाहर बैठाया जाता है। नंदू डोम यह जानकर हैरान है। वह आचार्य जी से पूछते हैं – 'क्या ब्राह्मणों में भी ऊंच–नीच होती है? अस्पृश्यता भी है?

कई दलित साहित्यकारों ने जाति के सवालों के साथ–साथ सरकारी विभागों के कामकाज पर भी सवाल उठाए हैं. जाति व्यवस्था से उभरी सर्वोच्चता ने दलितों को न्याय से वंचित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सरकारी हलकों में बैठे सवर्ण अधिकारियों का रवैया दलितों को न्याय की सीढ़ी पर चढ़ाने की बजाय डरा–धमका कर भगाना है. दलितों

पर अत्याचार करने वाली सवर्ण जातियाँ उनके प्रभाव और सजातीय अधिकारियों की मिलीभगत के कारण बच जाती हैं। ऐसा देखा गया है कि कई मामलों में पीड़ित दलित को अपराधी बना दिया जाता है.

उदाहरण के लिए, मोहनदास नैमिशराय की एक और कहानी 'निजाम' (हंस नवंबर 2019, वर्ष 34, अंक 4) एक परत दर परत और धारावाहिक कहानी है जो दलित कैदियों पर जाति आधारित पुलिस दमन की भयानक सच्चाई को रखती है। दिलचस्प बात यह है कि यह कहानी ऐसे समय में आई है जब सरकार निजाम दावा कर रही है कि वह दलितों की रक्षा के लिए तैयार है। चूंकि न्यायिक व्यवस्था दलितों के नियंत्रण में नहीं है, इसलिए उन्हें प्रशासन की बेरहमी का शिकार होना पड़ता है। कहानी 'निजाम' के जेलर सी.एल. दुबे कैदियों के साथ जाति के आधार पर व्यवहार करते हैं। अगर कैदी भंगी समुदाय से है तो वह उसे खाना बनाने और मेस साफ करने का काम देता है। कहानी के आख्यान में जेल निजाम की निर्मम और शुष्क संवेदना को ममदू की पीड़ा के माध्यम से खोला गया है।

ममदू जाति से भंगी है, जिसकी मां हाथ से मैला ढोने का काम करती थी। जब मालिक अपनी मां के साथ अत्याचार करता है तो ममदू विरोध करती है। पुलिस ने अपराधी को पकड़ने के बजाय ममदू को अपराधी बना कर जेल में डाल दिया. कहानी बताती है कि जेल के डॉक्टर भी दलितों के इलाज में भेदभाव करते हैं। एक अछूत के घाव भी अछूत थे। वे घाव जिन्हें डॉक्टर ने छूने से मना कर दिया।' 'निज़ाम' कहानी के एक पात्र प्रभात कुमार को लगता है कि 'क्या इस देश में कोई ज़मीन का टुकड़ा होगा जहाँ दलितों के साथ अन्याय न हो।' कहानी यह सवाल उठाती है कि जब तक सरकारी विभागों के निजाम अपनी सवर्ण मानसिकता को नहीं त्यागेंगे, तब तक दलित को सामाजिक न्याय और प्रतिनिधित्व नहीं मिल सकता। अतः स्पष्ट है कि लेखक मोहनदास नैमिशराय की आत्मकथा, सवर्ण समाज को आइना दिखाती है

निष्कर्ष :–

मोहनदास नैमिशराय की लेखकीय यात्रा बहुत आसान नहीं रही है। मोहनदास नैमिशराय इस आत्मकथा में एक जगह कहते हैं कि "मैं सड़क का आदमी था और सड़क का लेखक भी। शब्द ही तो थे जो इस चाबुक का काम करते थे। फ़र्क सिर्फ़ इतना था कि चाबुक की आवाज़ नहीं होती थी।" इस कथन के पीछे मोहनदास नैमिशराय की पीड़ा और संघर्ष के सूत्र पकड़े जा सकते हैं। संघर्ष की आँच में भी दलित आंदोलन और चिंतन का दामन इस आत्म कथाकार ने नहीं छोड़ा था। दलित आंदोलन और साहित्य उनके जीवन का मिशन बन गया था। संघर्ष के रास्ते में न जाने कैसे–कैसे मोड़ आये लेकिन मोहनदास नैमिशराय ने स्वार्थ और व्यक्तिगत आकांक्षा के लिये दलित साहित्य और आंदोलन से कोई समझौता नहीं किया था। पत्रकारिता और दलित लेखन में उन्होंने लेखन को ज़्यादा तरजीह दी है। मोहनदास नैमिशराय ने लिखा कि पत्रकारिता के जंजाल से निकलकार मैं अपनी अनुभूति और संवेदनाओं का इतिहास लिखना चाहता हूँ। दलित समाज के दुख संघर्ष, अनुभव और इतिहास को उन्होंने साहित्य सृजन के माध्यम से लाने का काम किया है। कई अखबारों और पत्रिकाओं से जुड़कर आपने दलितों की दुर्दशा को उजागर करने और सामाजिक जागृति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अतः स्पष्ट है कि आज के युग में दलित जीवन पर साहित्य की रचना करने वाले लेखकों में आपका नाम महत्वपूर्ण है। दलित महिलाएं, वेश्याएं, मजदूर, उपेक्षित वर्ग आदि आपके लेखन का हिस्सा बन जाते हैं और अपनी पीड़ा को पाठकों के सामने पेश करते हैं। आपकी साहित्यिक अभिव्यक्ति में दलित समाज का वास्तविक जीवन झलकता है। इसलिए आपके साहित्य का दलित साहित्य में बहुत महत्व है।

संदर्भ सूची :–

1. डॉ. कुमुदिनी पाटील– 'संत ज्ञानेश्वर और तुलसीदास तुलनात्मक अध्ययन', पृ. 37
2. डॉ. सरोज मार्कण्डेय 'निराला के साहित्य में युगीन समस्याएँ', पृ. 12
3. मोहनदास नैमिशराय 'अपने अपने पिंजरे', भूमिका से
4. मोहनदास नैमिशराय– 'अपने–अपने पिंजरे', भाग– 1, पृ. 13
5. सं. रमणिका गुप्ता युद्धरत आम आदमी, चेतना विशेषांक', पृ. 311
6. मोहनदास नैमिशराय की चुनी हुई कहानियाँ' मोहनदास नैमिशराय,अनन्य प्रकाशन, संस्करण, 2014
7. मोहनदास नैमिशराय 'अपने–अपने पिंजरे, भाग– 1
8. मोहनदास नैमिशराय परिशिष्ट 1 से उद्धृत 5
9. मोहनदास नैमिशराय अपने–अपने पिंजरे, पृ. 148
10. संपा. रमणिका गुप्ता 'दलित चेतना विशेषांक', पृ. 311 2. मोहनदास नैमिशराय 'अपने–अपने पिंजरे', पृ. 147
11. जीतूभाई मकवाना – 'समकालीन हिंदी दलित साहित्य', पृ. 1

*Corresponding Author: सिया राम मीणा